आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:09-11-14

बापदादा ने हम बच्चों को वरदान दिया है की सफलता तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है या कहे विजय तुम्हारा जन्म-सिद्ध अधिकार है. अगर हम ब्राह्मणों को यही एक ही वरदान अर्थ सहित स्मृति में रहे तो हम सफलता मूर्त या विजयी आत्मा बन जायेंगे.

कहा भी जाता है कि जैसा संकल्प हम करेंगे ऐसी स्थिति का हम निर्माण करेंगे. इसलिए हमें सदा अपने को भाग्यशाली आत्मा समझ, कल्प-कल्प की विजयी आत्मा समझ हर रोज अमृतवेले बापदादा का यह वरदान कि सफलता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है - इसको जरूर याद करना हैं. सुबह में किया हुआ यह संकल्प हमें सारे दिन के लिए निर्विघ्न बना देता है. माया द्वारा कोई भी परिस्थिति आये पर हम विजयी बनते हैं.

बाप दादा की आज की अव्यक्त मुरली से हमारे अभी के पुरुषार्थ के आधार पर बापदादा हमारे में क्या देखते है?

- बापदादा हरेक बच्चे के आदि से अब तक की संगमयुगी अलौकिक जन्म की जन्मपत्री देख रहे थे. हरेक बच्चे ने स्वयं से और बापदादा से किये हुए वायदे कहा तक निभाये है. बच्चों ने कहा तक अपने ही किये हुए वायदों पर चल रहे है - यह जन्मपत्री देख रहे थे.

- बापदादा ने देखा की बच्चे प्रतिज्ञा करते समय बहुत उमंग उत्साह से हिम्मत से संकल्प लेते हैं. कुछ समय संकल्प को साकार में लाने, समस्याओं का सामना करने की शुभ भावना से, कल्याण की कामनाओं से सम्पर्क में आते सफलता मूर्त बनते हैं. परन्तु चलते-चलते अपने ही संकल्पों पर फूल अटेन्शन की बजाय सिर्फ अटेन्शन रह जाता है और कभी-कभी अटेन्शन की जगह टेन्शन में बदल जाता हैं.

- विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है - यह समर्थ संकल्प धीरे-धीरे रुप परिवर्तन कर, जन्म सिद्ध अधिकार की बजाए कब-कब बाप दादा के आगे बोल निकलते हैं कि अधिकार दो, शक्ति दो. "है" शब्द "दो" में बदल जाता है. मास्टर दादा वरदाता, दाता के बजाए लेवता बन जाते हैं.

बापदादा हमारे में क्या देखना चाहते है?

- बापदादा नये वर्ष में अब नया खेल देखना चाहते हैं. जिस खेल में हर दृश्य का लक्ष्य सदा विजय हो. हम विजयी हैं, विजयी रहेंगे - ऐसा संकल्प हर कर्म में सदा प्रत्यक्ष दिखाई दे. जैसे कल्प पहले का चित्र है - हरेक शक्ति सेना के हाथ में विजय का झण्डा लहरा रहा है.

बापदादा की हमें आगे पुरुषार्थ के लिए क्या प्रेरणा ये है?

- अब पुरुषार्थ के प्रत्यक्ष फलस्वरूप अर्थात सफलता स्वरूप बन स्वयं भी हर कार्य में सफल रहो और सर्व आत्माओं को भी प्रत्यक्ष-फल के अधिकारी बनाओ.

अपनी भाषा भी परिवर्तन करो.

- आपके सम्पूर्णॅता की समीपता ही विश्व परिवर्तन के घड़ी की समीपता है. अब बीती सो बीती कर व्यर्थ का खाता समाप्त करो. सदा समर्थ संकल्पों का खाता जमा करो.

- अभी से सदा काल के लिए अपने को ताज तिलक और तख्तधारी अनुभव करो. अपने सत्य स्वरूप आत्मा की स्मृति सदा काल के लिए हो.

- विश्व सेवा में संकल्प, वाणी और कर्म से दिन-रात सच्चे सेवाधारी बन संगठित रुप में सदा तत्पर हो जाओ तो विश्व सेवा में स्वयं की चढ़ती कला स्वतः ही होती जायेगी. पुण्य आत्मा बन, पुण्य का फल प्राप्त कर रहे हैं, सदा ऐसे अनुभव करेंगे क्योंकि समय की समीपता प्रमाण हर श्रेष्ठ कर्म का फल सदा सन्तुष्टता के रुप में वर्तमान और भविष्य दोनों ही काल में प्राप्त होगा. अब का जमा होना, जन्म-जन्मांतर की प्रालब्ध बनाना है.

बापदादा की मुरली से स्व-परिवर्तन के लिए विशेष यह सदा याद रखो -

१. सदा अपने को विशेष आत्मा समझ संकल्प वा कर्म करो.

२. सदा हरेक में विशेषताओं को देखो. हर आत्मा में विशेष आत्मा की भावना रखो. साथ-साथ विशेष बनाने की, शुभ कल्याण की कामना रखो.

३. सदा यह अटेन्शन रखो - किसी का भी अवगुण वा कमजोरी को देखना, स्वयं में उसे धारण करना हैं.

४. एक दो में सहयोग और स्नेह के पुष्प की लेन-देन करो.

५. हर कार्य में हाँ जी वा पहले आप का हाथ बढ़ाओ.

६. सदा हरेक विशेष आत्मा के आगे रुहानी वृति रुहानी वाइब्रेशन का धूप जगाओ.

७. जो भी आत्माये सम्पर्क में आवे उन्हों को सदा अपने खजानों से वैराइटी भोग लगाओ अर्थात खजाना भेट करो.

ॐ शांति.

Atma bhai appreciates to share your experience or feedback on a.brahmin.soul@gmail.com.